डा0 राममनोहर लोहिया और उनका सामाजिक चिन्तन

डॉ0 अभिलाष सिंह यादव
असिस्टेन्ट प्रोफेसर, राजनीति विज्ञान,
महामाया राजकीय महाविद्यालय, धनुपुर, इलाहाबाद

तिनके की ओट लेकर जो तूफान को रोकना चाहता है, वह तूफान के अस्तिस्व से अपरिचित होता है। तूफान उनसे अठखेली करके अपने प्रभाव को दिखाता हुआ आगे बढ़ जाता है।तिनकों का सहारा निर्जीव शक्ति के रुप में क्रन्दन कर उठता है। तूफान के बाद उसके प्रभाव का स्वरुप कहीं अच्छा और कहीं बुरा हो सकता है। समाजवाद का तूफान पूँजीवाद के अशक्त और असमर्थ तिनकों को जब गिराता है तब कुछ उन्मुक्त हो उठते हैं और कुछ उन्मादी। तूफान की प्रेरणाओं की पूजा सदा होती है। समाजवाद के तूफान की प्रेरणाओं में डा0 राम मनोहर लोहिया का नाम शीर्ष पर आता है। डा0 राम मनोहर लोहिया समाजवाद को वैज्ञानिक चेतना अैर बुद्धिवादी चिंतन देने में सदैव संलग्न रहे। उनका मन भारत की गरीबी से विक्षुब्ध था, लेकिन उन्होंने कभी अपने को केवल भारत की भूख तक ही सीमित नहीं रखा, विश्व की भूख उनके विषाद के कारण बनी। उनके सपनों में एक ऐसा विश्व था जिसमें गोरे–काले, स्त्री–पुरुष, गरीब–अमीर और ऊँच–नीच के स्वर अवरुद्ध थे। वह जिज्ञासु समाजवादियों के लिए, उत्सुक समाज सेवक के लिये एक अद्वितीय अवलम्ब थे। उनका विचार सूत्र मार्क्सवादी और गॉधीवादी मान्यताओं को पूर्णता अन्तर्विरोध के स्वर को प्रदान करने में इस रुप में गुथा गया है कि कही वह स्वयं मुखरित करते हैं, ''लोहिया गॉधी के सत्याग्रह और अहिंसा के अखण्ड समर्थक थे, लेकिन गॉधीवाद को वह अधूरा दर्शन मानते थेः वह समाजवादी थे, लेकिन मार्क्स को एकांगी मानते थे। वे राष्ट्रवादी थे, लेकिन विश्व सरकार का सपना देखते थे। वे आधुनिकतम आधुनिक थे, लेकिन आधुनिक सभ्यता को बदलने का प्रयत्न करते रहते थे, वे विद्रोही और क्रान्तिकारी थे, लेकिन शान्ति व अहिंसा के अनूठे उपासक थे।''1

डा0 लोहिया का समाजवाद– समाजवाद विचार के जगत को एक ऐसी दृष्टि प्रदान करता है, जो गरीबी को मिटाने के लिये उत्पादन और वितरण के साधनों पर अपना प्रभुत्व रखती है। समाजवाद के भारत में प्रचलित अर्थो के सन्दर्भ में वामपन्थी राष्ट्रीयता या वामपन्थी आर्थिकता को लोहिया समाजवाद कहने और मानने के लिये तैयार नहीं। लोहिया के लिये वामपन्थी राष्ट्रीयता, उग्रपन्थी आर्थिकता, उग्रपन्थी धार्मिकता, उग्रपन्थी सामाजिकता तथा उग्रपन्थी राजनीतिकता किसी रुप में भी समाजवाद की पूर्णता की प्रतीक नहीं बन सकती क्योंकि इनमें से किसी एक को स्वीकार करने का अर्थ समाजवाद का स्वरुप खण्डित होगा। हमें हिन्दुस्तान में जिस समाजवाद की कल्पना को साकार देखना है, वह किसी रुप में भी योरोप का समाजवाद नहीं हो सकता, उसे तो पूरी तरह से भारतीय परिस्थितियों और इतिहास के अनुकूल बनना है। ''हिन्दुस्तान के समाजवाद को अब आध्यात्मिक और भौतिक दोनों को वैचारिक पुट देकर खड़ा किया जाये, यह नही कि फिर खिचड़ी पकायी जाये, बल्कि एक ऐसे आधार पर खड़ा किया जाये कि जिसमें उसे मनुष्य के इन दोनों तत्वों की सहायता मिल सके।''2

राष्ट्रीयकरण की दिशा में वह सम्पत्ति के मोह को विसर्जित करना आवश्यक समझते हैं। ''जब तक सम्पत्ति की असलियत रहेगी, तब तक सम्पत्ति के मोह को समाप्त करने की बात करना आत्मप्रवचना और धोखेबाजी है। इस धोखेबाजी को हम पॉच हजार वर्ष से चलाते आ रहे हैं।

सामूहिक सम्पत्ति बढ़ाते हुये, व्यक्तिगत सम्पत्ति के मोह का नाम करते रहते हम हिन्दुस्तान में शायद एक नये समाजवाद की स्थापना करेंगे।''3 समाजवाद के इस प्रकरण में उन्होंने हिसंक साधनों की सदा उपेक्षा की है। उनके अनुसार हिंसा किसी कार्य का अचूक मन्त्र नहीं, बहुत से काम अहिंसा ओर अहिसात्मक पद्धति से सरलता से सम्पन्न हो सकते हैं। ''अन्याय का विरोध करने के या परिवर्तन लाने के दो रास्ते हैं हथियार वाला या खूनी क्रान्ति वाला रास्ता और सिविल नाफरमानी का रास्ता। पहला रास्ता तो इतिहास कई बार आजमा चुका है। उसके पुनरावर्तन से कोई लाभ नहीं। दूसरा रास्ता सिविल नाफरमानी का है। इस रास्ते से अराजकता नहीं आ सकती, असम्भव है। महज थोड़ी बहुत गड़बड़ी हो

सकती है, क्योंकि पथ नया है। यदि लोग इस पर चले तो निःसन्देह नया मनुष्य पैदा होगा। सिविल फरमानी किसी दिन हिस्दुस्तान को और दुनिया को खून और रक्तपात से बचायेगी।''4

एशिया की दोषपूर्ण रचना के आधार– डा0 राम मनोहर लोहिया ने सम्पूर्ण एशिया के समाजवाद को एक ही प्रकार के समाजवाद की संज्ञा दी है, जिसे कुछ विशेष कमजोरियों का शिकार होना पड़ रहा है– (1). राजनीति पर धर्म का विशेष प्रभाव है, इस राजनीति को जाति अथवा प्रजाति दोनों ही प्रभावित करते हैं। (2). विरोधियों की राजनीति को शक्ति और हिंसा के आधार पर दबा दिया जाता है। (3). ऐसी मध्यवर्गीय श्रेणी का जन्म जिसमें नौकरशाही और राजनीतिज्ञ जिनकी मनोवृति, आदतें और चिन्तन योरोप से प्रभावित है। (4). मन्त्र के कलाकारों को कुशलपूर्ण, नेतृत्व, जिनके कार्य महत्वहीन है। (5). समन्वित सामाजिक दर्शन, नीतियों और कार्यक्रमों का सर्वथा अभाव है। यह अन्तिम बीमारी सभी बीमारियों की जड़ है।''5

इन बिमारियों को दूर करने के लिये उन्होंने नागरिकता के क्षेत्रीय विस्तार को आवश्यक माना। समाजवाद को उन्होंने पृथकता का विरोधी कहा। लोहिया का यह निश्चित मत था कि पूँजीवाद और साम्यवाद दोनों ही आर्थिक समस्याओं का निदान नहीं कर सकते, इसलिये उन्होंने छोटी–छोटी योजनाओं और विकेन्द्रीयकरण की प्रवृत्ति अपनाने पर जोर दिया । लोहिया साम्यवाद और पूँजीवाद की सीमाओं (कमियों) के सन्दर्भ में ही एशिया की तीसरी शक्ति के रुप में सामाजवादी विचार को प्रसारित करना चाहते थे। पूँजीवाद सम्पूर्ण मानवजाति को पूँजी नही दे सकता, साम्यवाद एक कठोर केन्द्रीय तन्त्र को देकर(दलीय शासन) मनुष्य को विकास के अवसरों से वंचित रखता है। इन कमियों के अतिरिक्त लोहिया को इनकी आधार भूमि ही स्वीकार नहीं थी, फलतः उन्होंने समाजवाद को प्रजातन्त्रीय आधार भूमि की स्वीकार किया। लोहिया के लिये समाजवाद और प्रजातन्त्र एक–दूसरे की पूरक व्यवस्था है।''6

राष्ट्रधर्म और शक्तिशाली भारत – डा.0 लोहिया का समाजवाद राष्ट्रीय सीमाओं से उन्मुक्त था, वह भौगोलिक सीमाओं को तोड़ने का समर्थन करके विश्व सरकार का समर्थन करते हैं। इस समर्थन के लिये उन्होंने अपने जीवन में बिना पासपोर्ट विश्व भ्रमण की योजना बनाई। वह इस योजना के अन्तर्गत बर्मा तक घूम भी आये उनका विश्वप्रेम न तो राष्ट्रधर्म से विमुख करता है और न तो भारत को किसी रुप में भी कमजोर देखना चाहता है। अब जब तिब्बत पर चीन का आक्रमण हुआ तब उन्होंने सम्भावित खतरे की भूमिका अनुमान करते हुये भारत की फौज में विस्तार की आवश्यकता पर बल देते हुये कहा था, ''तिब्बत पर चीनी हमले से भारत को चिन्ता नहीं पैदा होनी चाहिये क्योंकि भारतीय फौज विदेशी हमला रोकने के लिये काफी मजबूह है। देश की आबादी को देखते हुये हमारी फौज में विस्तार होना चाहिये।''7

लोहिया जी का भारतीय भाषा प्रेम :

समाजवादी राजनीति के पुरोधा डा0 राम मनोहर लोहिया के भाषा सम्बन्धी समस्त चिन्तन और आन्दोलन का लक्ष्य भारतीय सार्वजनिक जीवन से अंग्रेजी के वर्चस्व को हटाना था। लोहिया भारतीय जनमानस पर थोपी गयी अंग्रेजी के स्थान पर भारतीय भाषाओं को प्रतिष्ठा दिलानें के पक्षधर थे। 19 सितम्बर 1962 को हैदाराबाद में लोहिया जी द्वारा दिये गये भाषण में कहा गया था ''अंग्रेजी हटाओं का मतलब हिन्दी लाओं नहीं होता। अंग्रेजी हटाओं का मतलब होता है, तमिल या बंगला और इसी तरह अपनी–अपनी भाषाओं के प्रतिष्ठा । उन्हें अंग्रेजी के विपुल साहित्य का सम्मान करते थ। पर लोहिया जी हिन्दी को राष्ट्रभाषा बनाने के पक्ष में थे, क्योंकि देश की अधिसंख्य जनता हिन्दी समझती थी। जबकि अंग्रेजी गुलामी का प्रतीक था।''8 डा0 लोहिया भारत को शक्तिशाली देखने के समर्थक थे, इसलिये उन्होंने युद्ध के सन्दर्भ में फौज की ताकत ाके बढ़ाने का प्रस्ताव किया, यह अंहिसा की कमजोरी नहीं बल्कि अपनी क्षमता का सही विस्तार है। वह निर्विवाद सत्यों की भूमिका में अंग्रेजी की विदाई का समर्थन करते हैं, क्योंकि वह मानते थे कि जिस देश और जाति की अपनी भाषा नहीं होती, उसका पतन अवश्य होता है। वह अग्रेजी हटाने के समर्थ थे, लेकिन वह उसके साथ साथ देशी भाषाओं का सम्मनित स्थान दिये जाने का समर्थन करते थे। राष्ट्र को एक इकाई व कड़ी के रुप में जोड़ने के लिये उन्होंने हिन्दी को सम्पर्क भाषा के रुप में तथा राष्ट्र भाषा के रुप में स्वीकार किया, किन्तु इन्होंने कठिन

हिन्दी के स्थान पर सरल हिन्दी का समर्थन किया, क्योंकि हिन्दी को यदि कठिन बनाकर प्रस्तुत किया गया तो वह सम्पर्क भाषा के रुप में विकसित नहीं हो सकती।''9

डा0 लोहिया की सात क्रान्तियॉ – लोहिया का समाजवाद विचार और तर्क की दुनिया में प्रजातन्त्र का समर्थन करता है।वह प्रत्येक नागरिक केलिये राजनीतिक स्वतन्त्रता का समर्थन करते थे। व्यक्तिगत जीवन का विकास इन्हीं स्वतन्त्र अवस्थाओं में सम्भव हो सकता है। यही कारण है कि उन्होंने अहिंसा के सन्दर्भ में सिविलनाफरमानी को नागरिक अधिकार के रुप में स्वीकार कियो जाने पर बल दिया। लोहिया जिस नवीन और संशोधित समाजवाद को भारत की परिसितियों पर आरोपित करते है, उसमें आर्थिक विकेन्द्रीकरण और समानता के आदर्शो का पुट होता है। वह सामाजिक न्याय के लिये गॉधीवादी साधनों के प्रति सहमति अभिव्यक्त करते हैं। वह अपने समाजवाद में जातिवाद की दूषित गन्ध का प्रवेश वर्जित रखते हैं। इसलिये उन्होंने जातिप्रथा को समाप्त करने का सदैव प्रयत्न किया। उन्होंने सामाजिक जीवन में स्त्रियों के समानाधिकार पर विशेष बल दिया।

डा0 लोहिया ने अपने समाजवाद की पुष्टि के लिये सात क्रान्तियों का आह्वान किया। यह सात क्रान्तयॉ समाजवाद की मूल भावना के अनुकूल होने के कारण उसका मूलाधार ही है।''10

(1). स्त्री–पुरुष की समानता के लिये क्रान्ति।
(2). चमड़ी के रंग पर रची राजकीय आर्थिकऔर दिमागी असमानता के विरुद्ध क्रान्ति।
(3). संस्कार–गत, जन्मजात जातिप्रथा के खिलाफ और पिछड़ों को विशेष अवसर के लिये क्रान्ति।
(4). परदेशी गुलामी के खिलाफ तथा स्वतन्त्रता एवं विश्व लोकराज के लिये क्रान्ति।
(5).निजी पूॅजी की विषमताओं के खिलाफ कौर आर्थिक समानता के लिये तथा योजना द्वारा पैदावार बढ़ाने के लिये क्रान्ति।
(6). निजी जीवन में अन्यायी हस्तक्षेप के खिलाफ और लोकतन्त्र पद्धति के लिये क्रान्ति।
(7). अस्त्र–शस्त्र के खिलाफ ओर सत्याग्रह के लिये क्रान्ति।''11

डा0 लोहिया ने मार्क्सवादी चिन्तन को गॉधीवादी पृष्ठभूमि में प्रस्तुत किया। उन्हें भारतीय संस्कृति से अगाध प्रेम था। उन्होंने समाजवाद की योरोपीय सीमाओं और अध्यात्मिकता की राष्ट्रीय सीमाओं को तोड़कर एक ऐसी दृष्टि विकसित की जिसमें नये विश्व के स्वर स्पष्ट रुप से सुनाई देते हैं। नये विश्व में वह अन्याय और प्रतिकार के शब्द सुनने के लिये उत्सुक नहीं थे, उनकी विद्रोही आत्मा ने इनके विरुद्ध सदैव संघर्ष किया। उन्होंने स्वयं इतिहास बनाकर सम्पूर्ण आजादी और समाजवादी विचारों को तर्कपूर्ण ढ़ंग से प्रस्तुत किया। उनका राजनीतिक चिन्तन उन्हें सपनों की दुनिया से दूर रखता है। उनकी लगन उन्हें आजादी, समता और अन्याय के विरुद्ध संघर्ष करने को विवश करती है। उनके स्वर की वेदना में सारा देश टूटा हुआ है। देश की आत्मा टूट गई है। मैं जानना चाहता हूॅ कि क्या इतिहास में कोई और भी देश ऐसा कर रहा है, जो इतना है, जितना हिन्दुस्तान।'' वस्तुतः उन्होंने देश की जनता के बीच रहकर हिन्दुस्तान की कमजोरी को अनुभव किया था, उनकी सात क्रान्तियॉ और संशोधित समाजवाद सही का सही उत्तर था।

सच्ची बात :

वह मानते थे कि जिस सरकार से जनता संतुष्ट न हो उस अयोग्य सरकार को सत्ता में रहने का कोई हक नही होता और जनता को ही उसे हटा देना चाहिये। इसीलिये उन्होंने कहा था कि ''जिन्दा कौमें पॉच वर्ष इन्तजार नहीं करती'' वे स्वयं लगातार 16 वर्ष से शासन कर रही नेहरु सरकार के खिलाफ सर्वप्रथम अविश्वास प्रस्ताव आये थे। अक्सर उन्हें विद्रोही समाजवादी कहा जाता है क्योंकि न तो वह अपने विचारों कों प्रकट करने से पीछे हटते थे और न ही सत्य कहने से हिचकते थे। ''यथार्थतः जानकारी देना लोकहित में है न कि जानकारी छिपाना।'' 1962 में चीन हमले के बाद उन्होंने घोषणा की कि अपनी सुरक्षा के लिये भारत को भी बम बनाने चाहिये। राजनीति के सम्बन्ध में उनका कहना था कि भारत में कौन शासन करेगा इसका निर्धारण तीन बातों से होता है– उच्च जाति, धन और ज्ञान। जिसके पास इनमें से कोई भी दो चीजें होती हे वह शासन कर सकता है। सम्पूर्ण आजादी, समता, सम्पन्नता, अन्याय के विरुद्ध जेहाद और समाजवाद की वो फिजा नहीं है क्योंकि लोहिया जी भी अब नही है, लेकिन दूसरों के लिये जीने वाले कभी मरा नहीं करते। लोहिया आज भी

विचारों में जीवित है। लगन, ओजस्विता और उग्रता प्रखरता को जब तक गुण माना जाता रहेगा तब तक लोहिया अमर रहेंगे। लोहिया मूलतः राजनीतिक, विचारक, चितंक और स्वप्न दृष्टा थे, लेकिन उनका चिन्तन राजनीति तक ही कभी सीमित नहीं रहा । व्यापक दृष्टिकोण, उनकी दूरदर्शिता, उनकी चिन्तन–धारा की विशेषता थी। राजनीति के साथ–साथ संस्कृति, दर्शन साहित्य, इतिहास भाषा आदि के बारे में भी उनके विचार मौलिक थे। लोहिया की चिन्तन धारा कभी देशकाल की सीमा की बन्दी नहीं रही। विश्व की रचना और विकास के बारे में उनकी अनोखी और अद्वितीय दृष्टि थी। इसलिये उन्होंने सदा ही विश्व नागरिकता का सपना देखा था। उनकी चाह थी कि एक दूसरे देश में आने–जाने के लिये किसी तरह की भी कानूनी रुकावट न हो और सम्पूर्ण पृथ्वी के किसी भी अंश को अपना मानकर कोई भी आ–जा सकने के लिये पूरी तरह आजाद हो। लोहिया एक नयी सभ्यता और संस्कृति के दृष्टा और निर्माता थ। लेकिन आधुनिक युग जहॉ उनके दर्शन की उपेक्षा नहीं कर सका, वहीं उन्हें पूरी तरह आत्मसात भी नहीं कर सका। अपनी प्रखरता, ओजस्विता, मौलिकता, विस्तार और व्यापक गुणों के कारण वे अधिकाशंतः लोगों की पकड़ से बाहर रहे। इसका एक कारण है– जो लेाग लोहिया के विचारों को ऊपरी सतही ढ़ंग से ग्रहण करना चाहते हैं, उनके लिये लोहिया बहुत भारी पड़ते हैं। गहरी दृष्टि से ही लोहिया के विचारों, कथनों और कर्मों के भीतर के उस सूत्र तो उनकी विचार–पद्धति है। दुनिया के सभी क्षेत्रों की परमप्राओं द्वारा प्राप्त स्थल–कालबद्ध अर्द्धसत्यों को सम्पूर्ण बनाने की दृष्टि से संशोधन की चेष्टा लोहिया के जीवन भर साधना रही है। आज दुनिया की दो–तिहाई आबादी का दर्द और गरीबी व विपन्नता को जड़ से मिटाने और समस्त विश्व को युद्ध और विनाश की बीमारी से मुक्त करने का निदान लोहिया ने बताया था। साथ ही वह यह भी जानते थे कि निदान सही होने पर भी संसार में फैला स्वार्थ और लेाभ उसे मंजूर न करेगा। जीवन के अंतिम समय में वे एक भविष्य वक्ता ही तरह बोले– ''जयप्रकाश अपने जीवन के अंतिम क्षणों में यदि क्रांति की बात करेंगे तो देश उनके साथ होगा।

उनका कहा यह सच समूचे विश्व ने देखा था। जब जयप्रकाश नारायण के साथ सारा देश खड़ा था। जैसा स्वराज डॉ0 राम मनोहर लोहिया चाहते थे, वैसा ही गॉधी जी भी चाहते थे। गॉधी जी के सपनों का भारत डा0 राम मनोहर लोहिया के सपनो के सपनों के भारत से अलग नहीं था। अंतर केवल इनता ही था कि जहॉ लोहिया समाजवादी न्याय की जमीन पर ही विश्वास करते थे।, वहीं गॉधी जी मनुष्य की मनुष्यता पर विश्वास करते थे। राम मनोहर लोहिया इतिहास भी हैं और मिथक भी। वे राजनीतिज्ञ भी है और धर्मगुरु भी। वे दार्शनिक भी है और राजनीतिक कार्यकर्त्ता भी। सचमुच आज के समाजवादी नेताओं को देखकर यकीन नही होता कि उनके आंदोलन में कभी इतनी विलक्षण प्रतिभा रही होगी। इसे समाजवाद की पराकाष्ठा की कहा जायेगा कि वह अपने पीछे न कोई सम्पत्ति और न बैंक बैलेन्स छोड़ गये। आज उनके विचारें पर दृष्टि डालना न सिर्फ प्रासंगिक है बल्कि अपरिहार्य भी है।

संदर्भ सूची

1. शरद ओंकार–लोहिया के विचार पृ0 सं0 – 10
2. सम्पादित ओंकार शरद–लोहिया के विचार पृ0 सं0 – 236
3. सम्पादित ओंकार शरद–लोहिया के विचार पृ0 सं0 – 39–40
4. सम्पादित ओंकार शरद–लोहिया के विचार पृ0 सं0 – 236
5. लोहिया राम मनोहर–आस्पैक्ट ऑफ सोशलिस्ट पालिसी, पृ0 सं0 – 10
6. डॉ वीरेन्द्र शर्मा – आधुनिक भारतीय राजनैतिक विचारधारायें पृ0 सं0 – 518
7. लोहिया राम मनोहर–भारत चीन और उत्तरी सीमायें पृ0 सं0 – 149
8. डा0 वीरेन्द्र सिंह यादव – डा0 राम मनोहर लोहिया वैचारिक विमर्श पृ0 सं0 – 111
9. डॉ वीरेन्द्र शर्मा – आधुनिक भारतीय राजनैतिक विचारधारायें पृ0 सं0 – 519
10. सम्पादित ओंकार शरद–लोहिया के विचार पृ0 सं0 – 65 और 67
11. डा0 वीरेन्द्र सिंह यादव – डा0 राम मनोहर लोहिया वैचारिक विमर्श पृ0 सं0 – 520